इकाई- 2

* ज्ञान की अवधारणा: दार्शनिक परिप्रेक्ष्य ⇒

⇒ शिक्षा व दर्शन के क्षेत्र में ज्ञान शब्द का प्रयोग बहुत अधिक किया जाता है। ज्ञान का दर्शन के साथ घनिष्ट संबंध है, क्योंकि दर्शन का अर्थ है- ज्ञान के प्रति प्रेम जीवन, जगत, आत्मा और परमात्मा आदि के विषय में वास्तविक ज्ञान प्राप्त करना। जैसे कि जॉन डीवी महोदय ने कहा है - "दर्शन का मुख्य उद्देश्य है वास्तविकता का ज्ञान।" दर्शन की तीन शाखाएँ हैं-

(i) तत्व मीमांसा (ii) ज्ञान मीमांसा (iii) मूल्य मीमांसा

दर्शन की दूसरी शाखा, ज्ञान मीमांसा के अंतर्गत ज्ञान के स्वरूप, विधियों तथा स्रोतों आदि की विवेचना की जाती है।

ज्ञान का प्रत्यय / अवधारणा / अर्थ ⇒ ज्ञान की दार्शनिक अवधारणा को जानने के लिए इसका शाब्दिक अर्थ जानना आवश्यक है।

ज्ञान का शाब्दिक अर्थ- ज्ञान शब्द संस्कृत की ज्ञा धातु से बना है जो 'जानना' अर्थ में प्रयोग होती है। किसी वस्तु अथवा विषय आदि के बारे में हमारा आरंभिक ज्ञान उनसे संबंधित सामान्य जानकारी अथवा सूचना पर आधारित होता है।

जब हम शिक्षण देते हैं तो हम ज्ञान प्रदान करते हैं इसलिए हमें जानना आवश्यक होता है कि हम ज्ञान के लिए किस स्वरूप का उपयोग कर रहे हैं, कैसे हम, विद्यार्थी को यथार्थ ज्ञान से परिचय प्रदान करें। क्या हम जो ज्ञान दे रहे हैं वह पूर्ण यथार्थ ज्ञान है सत्यता से पूर्ण है यह सब कुछ हम जानते हैं एवं समझते हैं क्या इन सिद्धान्तों का जानकारी शिक्षक को होना अति आवश्यक है। शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य ज्ञान प्रदान करना है, तथा जो भी तथ्य हम पढ़ाते हैं तो वह सत्य पर आधारित है सत्य और ज्ञान दोनों एक दूसरे से जुड़े हैं दोनों में कोई अंतर नहीं है। शाश्वत सत्य ही ज्ञान है। समाज के लिए ज्ञान ही शिक्षा है। सभी प्राचीन ऋषि मुनियों तथा मुस्लिम संतों का प्रयास ज्ञान हुआ तब उन्होंने उसका प्रचार प्रसार किया इस प्रकार

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner

से ज्ञान की उपयोगिता शिक्षा ही सिद्ध करती है। ज्ञान की दूसरी अवधारणा है कि ज्ञान सूक्ष्म है या स्थूल है यह बात हम अध्यापक के द्वारा विद्यार्थियों के अध्ययन करते समय शिक्षक एवं विद्यार्थी के मन में ज्ञान सूक्ष्म रूप से विद्यमान रहता है। दूसरी ओर पुस्तकों में जो भाषा लिखी है वह ज्ञान स्थूल है। एक उदाहरण के द्वारा हम समझ सकते है। जैसे पानी में नमक डालने पर जो नमक के छोटे कण है वे घुल जाते है और जो बड़े दाने होते है वे दिखाई देते रहते है ठीक इसी प्रकार से यह ज्ञान पुस्तकीय ज्ञान होता है ज्ञान के दो पक्ष है - प्रत्यक्ष ज्ञान और परोक्ष ज्ञान।

प्रत्यक्ष ज्ञान मनुष्य अपनी ज्ञानेन्द्रियों से अनुभव के द्वारा प्राप्त करता है। परोक्ष ज्ञान वो दूसरों से सुनने या पुस्तकों द्वारा प्राप्त होता है शिक्षा में दोनों प्रकार के ज्ञान का महत्व है। ज्ञान केवल अनुभूति मात्र है यह हम एक गेंद के समझ सकते है। यदि हम गेंद को देखते है तो हमें उसके रंग, रूप, आकार दिखाई देता है तो वह हमें इस पृथ्वी का आकार तथा सतह एवं उसके पूर्ण रूप को दर्शाती है। इस प्रकार से हम ज्ञान के कई स्तरों को पाते है और विभिन्न प्रकार से मनुष्य में कई प्रकार से सक्रिय होता है उसे हमें अनुभव तथा तर्क चिन्तन के माध्यम से प्राप्त करते है।

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner

* शिक्षा : सामान्य अवधारणा, उद्देश्य एवं विद्यालयी शिक्षा की प्रकृति :-

शिक्षा शब्द भावनात्मक है और इस में संचालन - शक्ति अधिक है। इसलिए कई युगों से इस शब्द के अनेक अर्थ उत्पन्न हो रहे थे और हो रहे हैं। शिक्षा के विषय में परिपूर्ण सर्वांगीण परिभाषा शायद ही कभी दी जा सके।

शिक्षा का उद्देश्य एवं मूल्यः-

शिक्षा के उद्देश्य को दो भागों में बाँटा जाता है - व्यक्तिपरक व समाज की संरचना के तर पर। अर्थात् लोगों को शिक्षा कही जाने वाली प्रक्रिया से अपेक्षा हो सकती है कि उससे एक खास प्रकार के व्यक्तित्व का निर्माण होगा। यहाँ शिक्षा अवस्था से तात्पर्य सिर्फ विद्यालय मात्र नहीं है, बल्कि समाज की सभी संस्थाएँ हैं, जो व्यक्ति के संपर्क में आती है। 'शिक्षा' शब्द एक सराहनीय प्रक्रिया के लिए प्रयोग होता है। इसलिए हमारे पास 'कुशिक्षा' या 'खराब शिक्षा' जैसे शब्द भी हैं। शिक्षा जैसी प्रक्रिया के बारे में सिर्फ शिक्षा विचारक ही नहीं बल्कि आम इंसान भी एक साथ रखता है। इसका प्रमुख कारण तो यही है कि वो भी उसमें भागीदार है और उससे प्रभावित भी है। शिक्षा कैसे सबकी चिंता का विषय है। किसी प्रशिक्षित शिक्षक के पढ़ाने को लेकर उसके विद्यार्थियों एवं उनके अभिभावकों की राय अलग - अलग हो सकती है। अतः शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त करने की कोई एक आदर्श समझ नहीं हो सकी है। इनको समझने के भी विभिन्न दार्शनिक आधार हो सकते हैं।

(1.) शिक्षा का उद्देश्य प्रेरणा देना और सीखने के अवसरों में वृद्धि करना, जिससे बच्चों में ज्ञानार्जन की कला का विकास हो सके।

(2.) बच्चों में स्व - चिन्तन तथा जिम्मेदारी पूर्ण आचरण का विकास।

(3.) उनमें सौन्दर्य बोध विकसित करना, जिससे वे सामाजिक एवं सांस्कृतिक धरोहरों के प्रति सम्मान का भाव रख सकें।

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner

(4) सत्यनिष्ठा, ईमानदारी तथा आत्मविश्वास का विका
(5) सामाजिक मूल्यों का संवर्धन
(6) अपने और दूसरों के धर्म के प्रति समरसता के भाव का विकास।
(7) अपने राज्य एवं देश के विविधता की समझ
(8) स्वयं एवं प्रकृति के साथ सामंजस्य बनाना एवं पर्यावरण के प्रति संवेदनशील बनाना जिससे उसके संरक्षण की व्यवस्था की जा सके।

शिक्षा की प्रकृति

(1) शिक्षा आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है। - शिक्षा जन्म से आरम्भ होती है तथा मृत्यु पर्यन्त चलती है।

(2) शिक्षा एक विकासात्मक प्रक्रिया है - पेस्टालॉजी का कहना है कि, "शिक्षा मनुष्य की जन्मजात शक्ति का स्वाभाविक, समरूप एवं प्रगतिशील विकास है।"

(3) शिक्षा एवं संश्लिष्ट प्रक्रिया है - शिक्षा की प्रक्रिया में जो विकास होता है, इसमें विकसित होने वाले अंग साथ - साथ कार्य करते हैं।

(4) शिक्षा एक द्विमुखी प्रक्रिया है - एडम्स का कहना है। शिक्षा एक द्विमुखी प्रक्रिया है। इसके एक ओर विद्यार्थी और दूसरी ओर शिक्षक रहता है। इस प्रक्रिया में एक सिरे पर अध्यापक रहता है और दूसरे सिरे पर छात्र रहता है। एक कहता है, दूसरा सुनता है तथा एक पढ़ाता है, दूसरा पढ़ता है। अध्यापक अपने व्यक्तित्व एवं ज्ञान से छात्र को प्रभावित करता है।

(5) शिक्षा एक त्रिमुखी प्रक्रिया है - एडम्स की बात को ड्यूवी ने भी माना है; किन्तु एक और तथ्य जोड़कर उसने शिक्षा को द्विमुखी के बदले त्रिमुखी कहा है। इसमें शिक्षक एवं छात्र के अलावा सामाजिक तत्वों का भी भरपूर प्रभाव है।

(c) शिक्षा एक सचेतन एवं प्रयोजनशील प्रक्रिया है - एडम्स ने लिखा "शिक्षा एक सचेतन एवं विचारपूर्ण प्रक्रिया है, जिसमें एक व्यक्ति दूसरे पर इसलिए प्रभाव डालता है कि दूसरे का विकास और परिवर्तन हो सके।"

(d) शिक्षा एक गतिशील प्रक्रिया है → शिक्षा स्थिर नहीं, विकासोन्मुख है। इसमें परिवर्तन होता है शिक्षा के गतिशील स्वरूप को सभी शिक्षाशास्त्री स्वीकार करते हैं। शिक्षा जीवन के लिए है। शिक्षा स्वयं जीवन है। जीवन विकास है, जीवन का अर्थ गति है। इसप्रकार शिक्षा गतिशील है।

(e) शिक्षा एक परिवर्तन → शिक्षा - शास्त्रियों का विचार है कि एक परिवर्तन है। यह व्यक्ति के व्यवहार एवं आचार - विचार में परिवर्तन लाती है। शिक्षा क्षमता में परिवर्तन लाती है और बालक को क्षमतशील बनाती है, अज्ञान के बदले ज्ञान का भंडार भरती है तथा विचारों, आदर्शों एवं अभिप्रेरणाओं में परिवर्तन लाती है।

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner